HMVL Media Marketing Initiative

हिन्दुस्तान
बिहार का नं.1* अखबार
*Source: AIR, IRS Q4 2019

हिन्दुस्तान PRIDE OF BIHAR 2023

समाज के स्तम्भ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. विवेकानंदः

दिल मांगे मोर, समाज सेवा का तो बहाना चाहिए जी...

ना कोई दर्द, ना कोई आराम, बस जिंदगी... देश के नाम...

अपनी मिट्टी, मां-बाप, परिवार व समाज का कर्ज चुकाने का जिसमें बिंदास जोश, जज्बा और जुनून भरा हो, वह निश्चय ही अपने परिवार के साथ ही, समाज, राज्य व देश का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ होता है। ऐसे लोगों को मानवता का पर्याय कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। यह बात दीगर है कि सूर्य किरण वेग वाले 'अधिकार' को पूरा करने के उनके ख्वाब ने ध्वनि गति से कर रहे कर्तव्य भी शनैः-शनैः बढ़ता प्रतीत होता है। वे खुद को एक मामूली इंसान मान कर्तव्यपथ पर बढ़ते जा रहे हैं। जिले के चिकित्सा जगत में ऐसे ही एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर विद्यमान हैं। नाम है-डॉ. विवेकानंद। नेत्र रोग विशेषज्ञ। जो एक बार मिल ले, बखान करते नहीं थकता।

डॉ. विवेकानंद कुमार

नेत्र रोग विशेषज्ञ

संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम	:	डॉ. विवेकानंद कुमार
पिता	:	श्री सुकर प्रसाद
माता	:	श्री श्यामा कांति सिन्हा
पत्नी	:	श्रीमती सुधा वी. कुमार
संतान	:	सक्षम शौर्य, वैभव शौर्य
पेशा	:	नेत्र रोग विशेषज्ञ
उपाधि	:	एमबीबीएस (पीएमसीएच, पटना) डीओएमएस (डीएमसीएच, दरभंगा)
रिकॉर्ड	:	राजकीयकृत उच्च विद्यालय लालबिगहा में सबसे अधिक अंकों से मैट्रिक पास करना
	:	हल्दिया, विवेकानंद मिशन आश्रम हॉस्पीटल के प्रथम फेलोशिप होने का गौरव
शादी	:	30 अप्रैल 1999
निवासी	:	तिउरी-मानपुर, बिहारशरीफ (नालंदा)
हॉबी	:	किताबें पढ़ना व क्रिकेट
लक्ष्य	:	समाज का साथ, समाज का विकास, समाज का विश्वास
	:	लायंस क्लब, बिहारशरीफ के साथ मिलकर समाज की सेवा
पंचलाइन	:	मुस्कुराहट के साथ सेवा का दृढ़ निश्चय
प्रेरक	:	पत्नी सुधा वी. कुमार

यूं ही नहीं कहा जाता है डॉक्टरों को धरती का भगवानः

आज जिस स्वरूप में डॉ. विवेकानंद हैं, यह उनके व पत्नी सुधा वी. कुमार की कड़ी मेहनत के साथ ही त्याग का परिणाम है। बेहतर पैकेज को तवज्जो न देते हुए बेहतर सेवा वाली जगह चुनी। पति-पत्नी कहते हैं-जीवन गुजारने के लिए पैसे जरूरी हैं। लेकिन, पढ़ाई व व्यवसाय का लक्ष्य सिर्फ पैसा को बना लेना भी कहीं से उचित नहीं है। बल्कि, जन्म देने वाले मां-पिता के साथ ही मिट्टी का कर्ज सेवा देकर उतारने की बात ही कुछ अलग है। बिहारशरीफ में अस्पताल खोलने के दौरान कई ऐसे मौके आये, जब उन्होंने न सिर्फ मुफ्त में सेवा दी बल्कि मरीज के खर्च का भी निर्वहन किया। ऐसे 'तपस्वी', होनहार व समाज के गरीब लोगों की चिंता करने वाले को सिर्फ 'डॉक्टर' कह देने से बात नहीं बनती। उनके लिए 'धरती का भगवान' शब्दों का उपयोग करना ही होगा।

जगत में वैसे कम ही लोग होते हैं, जिनकी अर्द्धांगनी अर्द्धनारीश्वर की तरह समाहित हों कि कौन बात किस मुख से निकली और किस हाथ ने उसे निर्वहन किया, पता ही नहीं चलता। ऐसी जोड़ी है डॉ. विवेकानंद व पत्नी श्रीमती सुधा वी. कुमार की। जोड़ी ऊपर वाले बनाते हैं-यह सभी लोग मानते हैं। लेकिन, शायद ही जोड़ी ऐसी हो कि एमबीबीएस की परीक्षा दे पति, और पत्नी किताबें रख जाएं। कॅरिअर बनाना हो पति का, और दिन-रात एक कर रणनीतियां तय करें पत्नी। 12 घंटे की ड्यूटी के बाद अचानक बुलाहट हो डॉक्टर पति की, और पत्नी रातभर पलकें बिछायी पति को कर्तव्यपथ पर यह कहकर भेज दे कि सेवा ही आपका धर्म है, मैं बाद में अपनी बातें साझा कर लूंगी। मां-बाप हों पति के और, उनके सपनों को जानने के साथ ही बिना बताये पूरी करने की ख्वाहिश हो पत्नी की। 'सोना' रूपी छात्र को तपकर और बेहतरीन डॉक्टर बनने का सपना हो पति का और पत्नी उसके लिए खुद बन जाती हैं 'भट्ठी। ऐसी है जोड़ी हमारे डॉ. विवेकानंद और श्री मती सुधा वी. कुमार की।

सिर्फ पैसे नहीं, आत्मसम्मान के हैं लालायितः

बेहद मध्यम किसान परिवार में जन्मे विवेकानंद शुरू से ही पढ़ाई-लिखाई में तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता वाले थे। चाहे पैतृक गांव तिउरी का सरकारी स्कूल हो या फिर लालबिगहा का हाईस्कूल, अपनी कक्षा में कभी दूसरे स्थान पर न रहे। पढ़ाई से प्रोफेशन में आने तक कई ऐसे मौके मिले, जब उन्हें 'रुपये की बरसात' में सराबोर होने का पूरा मौका मिल रहा था। लेकिन, उन्होंने इस राह को अपना पथ चुनने के लिए 'ना' कहने में तनिक भी देर न की।

आर्थिक तंगी में बीता बचपन :

विवेकानंद भले ही अति साधारण किसान परिवार में जन्मे थे। लेकिन, पिता श्री सुकर प्रसाद व मां श्रीमती श्यामा कान्ति सिन्हा को इनसे काफी आशा थी। इनकी दो छोटी बहनें निर्मला कुमारी सिन्हा व निरमा कुमारी सिन्हा के इकलौते भाई से भी अपेक्षाएं अनंत थीं। मां-पिता के अलावा बहनों के दुलारे जरूर थे, लेकिन आर्थिक तंगी इनका पीछा छोड़ने को तैयार नहीं थी। इसी दौरान उनके मन डॉक्टर बनने का ख्वाब पलने लगा। कभी इनके मुंह से यह ख्वाब बाहर आता तो मां-बाप के साथ ही बहनें काफी खुश होतीं। मां-पिता और बहनों को उनकी बातों पर पूरा यकीन भी होता था। कारण, उनका लगन, पढ़ाई में जोश, जज्बा और कुछ कर गुजरने की जुनून। इतना ही नहीं, गांव के लोगों, रिश्तेदारों और यहां तक कि उनके दोस्तों में भी इनकी छवि 'होनहार वीरवान के होते चिकने पात' वाली कहावत चरितार्थ करने वाली थी।

प्रैक्टिकल में कम दिया अंक, फिर भी किया रिकॉर्ड ब्रेक :

अपने गांव तिउरी (मानपुर) के पास के राजकीयकृत उच्च विद्यालय लालबिगहा में प्रवेश लेने के साथ ही वहां भी विवेकानंद ने अपनी अलग छवि बनायी। सभी शिक्षकों के साथ ही अपने दोस्तों में गहरी पैठ बन गयी। लेकिन, एकाध शिक्षक ऐसे भी थे, जिन्हें वे पसंद नहीं आते थे। यही कारण रहा कि प्रैक्टिकल में काफी कम अंक देकर सूरज रूपी उनकी मेधा को कमतर आंकने की भूल की गयी। बावजूद, हौसलाबुलंद विवेकानंद ने मैट्रिक में 734 अंक लाया। यह अंक स्कूल टॉपर ही नहीं बनाया, बल्कि स्कूल के स्थापना काल से उस समय तक इतना अंक से किसी पहले छात्र द्वारा लाने का रिकॉर्ड बनाया। इनकी ख्याति आसपास के गांवों में भी फैल गयी। बेहतर अंक लाने की खुशी उनके मां-पिता, बहनें व रिश्तेदार मना रहे थे। लेकिन, विवेकानंद को आगे की पढ़ाई जारी रखने और सपने को साकार करने की चिंता ने उन्हें पहले की अपेक्षा काफी गंभीर बना दिया।

किया पटना का रूख :

शीघ्र चार मंजिला भवन में होंगे शिफ्ट :

बिहारशरीफ शहर के मोगलकुआं से रहुई रोड जाने वाले पथ के बीच डॉ. विवेकानंद अपना अस्पताल बना रहे हैं। इस अस्पताल को निर्माण कार्य से लेकर इंटीरियर डेकोरेशन व संबंधित मशीनों की स्थापना में पत्नी सुधा वी, कुमार की अहम भूमिका है। आनंद पथ के छोटे से क्लीनिक से निकलकर शीघ्र ही चारमंजिला भवन में अस्पताल को शिफ्ट करेंगे। लेकिन, उनके स्वभाव की तासीर में कोई बदलाव न आने देने में भी पत्नी का अहम योगदान है और रहेगा। नये अस्पताल का नाम मॉडर्न आई केयर ही रखा जाना है।

मॉडर्न आई केयर अस्पताल, मोगलकुआं-रहुई पथ, बिहारशरीफ
फोनः9308462602, 9308093834

इंटर में पटना के बिहार नेशनल महाविद्यालय (बी.एन कॉलेज) में नामांकन के साथ ही पढ़ाई शुरू हुई। गंभीर मुद्रा में रहने वाले विवेकानंद को लोग प्यार से विवेक भी कहकर पुकारते थे। गांव से शहर का रूख उनके लिए एकबारगी नया माहौल में जाने जैसा था। सभी साथी स्कूल से कॉलेज में जाने की अकड़ में थे। लेकिन, इसके उलट विवेकानंद की गंभीरता बढ़ती जा रही थी। मां-पिता आखिर उन्हें किस तरह पढ़ाएंगे। आर्थिक बोझ की भरपाई कैसे होगी। छोटी बहन की शादी कैसे होगी। महंगी किताबों के साथ ही पटना में रहने-खाने के खर्च कहां से आएगा। लेकिन, इन सब पर भारी पड़ रह था, सपने को धरातल पर उतारने का जज्बा। मां-पिता के साथ ही बहनों की आंखों में साफ झलकतीं आकांक्षाएं। जब खर्च की सोच आती तो विवेकानंद चिंता में पड़ जाते। लेकिन, मां-पिता व बहनों की आंखों के सपने सामने आते तो सिर्फ किताबें ही दिखतीं। ये दोराहें उनमें गंभीरता के साथ ही लगन बढ़ाते। बावजूद, उन्होंने खुद पर चिंता को हावी नहीं होने दिया। अपने को स्थापित करने करने मंशा ने उन्हें जिंदादिल बनाये रखा।

पहले ही चांस में पार की डगर पनघट की :

सैकड़ों सहपाठियों के बीच खुद को स्थापित करते उन्हें देर न लगी। लेकिन, चार सहपाठियों के लक्ष्य समान थे। सो, मिलकर मेडिकल प्रतियोगिता परीक्षा पास करने की ठानी। कम खर्च में पढ़ाई पूरी करने की खातिर उन्होंने पटेल छात्रावास में कमरा लिया। अमित राज रूमेट बने। लेकिन, काफी समय तक पटेल छात्रावास में नहीं टिक पाये। कारण, उनकी मर्जी पढ़ाई पर समय देने की थी। ऐसे में दोस्तों के साथ अलग डेरा लिया। तैयारी के समय लगातार एक महीने सादी खिचड़ी खा कर ही पुरे दिल से पढ़ाई करते रहें। कड़ी मेहनत का परिणाम यह कि चारों ही दोस्तों ने पहले चांस में ही मेडिकल प्रतियोगिता परीक्षा पास कर ली। सभी दोस्तों का अलग-अलग मेडिकल कॉलेजों में एडमिशन हुआ।

पीएमसीएच का सफर :

विवेकानंद का नामांकन पटना मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में हुआ। एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने दरभंगा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल से स्नातकोत्तर की डिग्री ली। एमबीबीएस के दौरान मां-पिता की पसंद की लड़की से उनकी शादी करा दी गयी। शादी के प्रस्ताव से विवेकानंद काफी खुश न थे। काफी तनाव में आ गये थे। यही कारण रहा कि वे बिना समय का ख्याल रखे ही घर को चल दिये। जब राजेन्द्रनगर मुख्य सड़क पर पहुंचे तो पता चला कि अभी रात का ढाई ही बजा है। लेकिन, बेहतर परिवार और मां-पिता की मर्जी को वे ठुकरा न सके। लेकिन, शादी के पीछे का सबसे बड़ा कारण उनकी दुल्हन बनने वाली सुधा वी. कुमार की डिग्री व सुंदरता के साथ ही सुंदर स्वभाव। लड़की देखने विवेकानंद के साथ उनके प्रिय गुरु रहे श्री रामकृष्ण गराई भी गये थे। उन्होंने लड़की के समक्ष सवालों की बौछार की। लेकिन, बेहिचक जवाब और बोलने की अति उत्तम कला गुरु-शिष्य को भा गयी।

मातृभूमि की सोंधी महक ने खींच लाया नालंदा :

हल्दिया में अपनी धाक जमाने के बाद कई बड़े ऑफर जिसमे वेस्ट टिमोर (देश का नाम) के लाखों रुपये को नजरअंदाज करते हुए राजगीर की वीरायतन में बतौर आई स्पेशलिस्ट ज्वॉयन किया। वे एक दिन में160 आपरेशन तक कर चुके है। अब वे वीरायतन की ड्यूटी के साथ ही अपने मां-पिता, रिश्तेदार, व सगे- संबंधियों के साथ ही मिट्टी का कर्ज भी उतारने का भरसक प्रयास किया। इस दौरान उन्होंने बिहारशरीफ के आनंद पथ (नाला रोड) में खुद का क्लीनिक 2014 में खोला। बिहार-झारखंड के सैकड़ों गांवों में कैम्प लगाकर 30 हजार से अधिक ऑपरेशन किया। अब वे पहले की अपेक्षा और खुलकर 'अपने लोगों' की मदद करने लगे। अब भी इनका यह सफर जारी है।

पत्नी ने बदले हालातः

सफलता के पीछे किसी महिला का हाथ होता है। यह उनके साथ भी हुआ। संत जोसेफ स्कूल की टॉपर और अंग्रेजी विषय से एमए पास करने वाली उनकी पत्नी सुधा वी. कुमार पति की परछाई बनीं। परीक्षा विवेकानंद देते, लेकिन नोट्स बनातीं सुधा। इस तरह, 'दो बदन एक जान' की तरह दोनों ने इस कदर मेहनत की कि परिणाम सबके सामने है। पढ़ाई के खर्च की बात हो या महंगी व मोटी-मोटी किताबें खरीदने की, अब कोई चिंता न थी। सो, चिंता हटी तो विवेकानंद की पढ़ाई एकदम से एकाग्रचित हो गयी। क्रिकेट में छक्के पर छक्के लगाने की तरह अपनी पढ़ाई में विवेकानंद न 'छक्कों की बौछार' कर दी। क्या छक्का, क्या सेंच्यूरी, इनसबों से कहीं आगे निकलते चले गये। हर मुकाम पर सफलता कदम चुमती रही।

दो दिमाग/दिल मिलकर लेते फैसले :

दरभंगा से स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के बाद नई राह खोलने में हर फैसला 'दो दिल' मिलकर लेते। यही कारण रहा कि 50 हजार का पैकेज छोड़कर 2010 में हल्दिया-चैतन्यपुर के नेत्र निरामय निकेतन में महज 15 हजार मासिक पर फैलोशिप करने का दूरगामी निर्णय लिया। इस निर्णय ने यह साबित कर दिया कि न सिर्फ विवेकानंद, बल्कि उनकी जीवनसंगिनी का भी लक्ष्य सिर्फ पैसा कमाना नहीं था। यहां जाने का मुख्य कारण बेहतर अनुभव प्राप्त करने के साथ ही आंखों की सर्जरी में निपुणता हासिल करने की ललक था। हुआ भी ऐसा ही। वहां इन्होंने पांच हजार से अधिक ऑपरेशन किये। ऐसे क्रिटिकल ऑपरेशन भी किये, जो अमूमन असाधारण चिकित्सकों के भी पसीने छुड़ा देते हैं। ड्यूटी महज आठ से बारह घंटे की होती थी। लेकिन, उन्होंने खुद को 24 घंटे समर्पित रखा। परिणाम यह कि वहां के सभी प्रमुख प्रशासकों से लेकर चिकित्सकों ने इनकी मेहनत की दाद दी।

सास-ससुर के सपने को उतारने में कोई कोर कसर नहीं :

सास-बहू के रिश्ते जगजाहिर हैं। लेकिन, खुद को इस तरह ढाला कि पति ही नहीं, सास-ससुर ने भी बहू को 'घर की लक्ष्मी' का दर्जा दिया। सुधा वी. कुमार कहती हैं-मैं सास-ससुर को मां-पिता से दीगर कभी नहीं समझी। मैं उनके पास जितना समय व्यतीत करती, यह जानने का प्रयास करती कि उनकी ख्वाहिशें क्या-क्या हैं। मैंने उन्हें पूरा करने की कोशिश की। या यूं कहा जाये कि उनके सपनों को अबतक पूरा किया है। उनके सपनों को ही पूरा करने के लिए पति को बड़े पैकेज पर दूर के शहर अथवा विदेशों में नौकरी पर जाने से मना कर घर के पास सेवा देने का फैसला लिया।

पति के लक्ष्य भेदने को की अपने सपनों की कुर्बानीः

संत जोसेफ स्कूल में कक्षा एक से ही टॉपर रहने वाली सुधा वी. कुमार का सपना यूपीएससी परीक्षा पास करके बेहतर अधिकारी बनने का था। लेकिन, पति को 'धरती का भगवान' बनाने में विवेकानंद की तपस्या को बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए खुद को 'भट्ठी' बना डाला। अपने सपने को खुशी-खुशी त्याग दिया। और, पति को उनके क्षेत्र में उस ऊंचाई तक ले जाने में खुद की इच्छाओं का परित्याग कर दिया। मां सुंदरी देवी, पिता श्री रामजी प्रसाद व तीन भाइयों विपीन कुमार, प्रवीण कुमार व रूपेश कुमार की आंखों का तारा रहीं सुधा वी. कुमार काफी सुख-सुविधाओं के बीच पली-बढ़ीं। लेकिन, पति के साथ आने के बाद कभी भी अपनी पसंद-नापसंद का ख्याल तक नहीं आने दिया। न कभी शॉपिंग की न कभी पसंद के आभूषण की जिद की। कभी भी पति के लिए खुद को 'बोझ' नहीं बनने दिया। बल्कि, वे अपने पति की हर पसंद का ख्याल रखने लगीं। पति के लिए वे त्याग की प्रतिमूर्ति साबित हुईं। बेबी प्लानिंग भी शादी के 4 वर्ष बाद की। ससुर श्री रामजी प्रसाद जो कि एन.टी.पी.सी. शक्तिनगर में वरिष्ठ सिविल इंजीनियर थे चाहते तो बड़े से बड़े घराने के साथ ही सैटल्ड लड़के से बेटी ब्याह सकते थे। लेकिन, उन्होंने एमबीबीएस के छात्र रहे विवेकानंद को उनकी मेधा के साथ ही सरल स्वभाव व रिश्तेदारी निभाने के गुण को परखा। उन्होंने तय किया कि उनकी बेटी को कुछ दिन भले ही चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन जीवन काफी सुखमय बितेगा। आगे चलकर उनका दामाद न सिर्फ बेहतर पति बल्कि बेहतर दामाद, बेटा व समाज में एक मिसाल कायम करेगा।